तुलसी के तेवर

डॉ. गंगा प्रसाद बरसैंया

जीवन का
एक क्षण
करोड़ स्वर्ण मुद्रा
देने पर भी नहीं
मिल सकता।

– चाणक्य नीति

म
प्र

मगध प्रकाशन

गाजियाबाद–201 009 (उ. प्र.)

डॉ. गंगाप्रसाद बरसैंया के निबन्ध

तुलसी के तेवर

तुलसी के तेवर

तुलसी के तेवर

मैं
दूसरों के माल का
केवल संग्रहकर्ता
और
वितरक हूं।

– हेनरी वोटन

© लेखक

प्रथम संस्करण : 1999

कीमत : साठ रुपये/ **आवरण:** सुरंजन/ प्रकाशक : **मगध प्रकाशन**, सपना-घर, ई-717ए, प्रताप विहार, गाजियाबाद-201 009 (उ. प्र.) फोन : 741045/मुद्रक **एवन प्रिन्टर्स**, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32/शब्द संयोज़न : **वाही कम्पयूटर्स**, 115, रेलवे रोड़, बजरिया, गाजियाबाद – 201 001 (उ. प्र.)

तुलसी के तेवर

लेखक : डॉ. गंगाप्रसाद बरसैंया

Rs. 60.00

'तुलसी पंचशती' के पुनीत अवसर पर
महाकवि के चरणों में सादर समर्पित

बिनहिं कहे भल दीनदयाला

यह कहने में मुझे तनिक भी संकोच नहीं है कि महाकवि संत तुलसीदास मेरे सबसे प्रिय कवि और उनका कालजयी महाकाव्य रामचरितमानस मेरा सर्वाधिक प्रिय ग्रंथ है। विद्यार्थी और अध्यापक के रूप में लगभग पचास वर्षो तक निरन्तर अध्ययन-अध्यापन के बाद भी मेरी इस भावना में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। अध्ययन-अध्यापन की अविध में कितने ही महान लेखकों के श्रेष्ठतम कृतित्व को पढ़ने-पढ़ाने का अवसर मिला, किन्तु तुलसीदास के साहित्य में कुछ ऐसा अवश्य है, जो औरों में पूरी तरह नहीं मिलता।

यह मेरा सौभाग्य है कि मेरा जन्म बांदा (उ. प्र.) जिले के भौंरी ग्राम में हुआ जो तुलसीदास जी की जन्मस्थली राजापुर और उनकी तपस्थली चित्रकूट तथा आदिकवि बाल्मीकि के आश्रम-स्थल लालापुर के अत्यन्त निकट तथा तीनों के त्रिभुज के बीच पड़ता है। चित्रकूट का वह सम्पूर्ण क्षेत्र राममय है। बचपन में घर-घर रामचरितमानस का अखंड पाठ, गांव-गांव में रामलीलायें, आये दिन होने वाले भजन-कीर्तनों के संस्कार बचपन से ही मन में घनीभूत हो गये थे। पूजा के समय नित्य पढ़ी जाने वाली चौपाइयां जीवन का अभिन्न अंग बन गई।

इसका यह आशय कतई नहीं है कि अंध-श्रृद्धा ने मुझे तुलसीदास या उनकी कृतियों के साथ जोड़ दिया। अंध-श्रृद्धा की बजाय उसमें श्रृद्धा की संहभागिता तो मानी जा सकती है, पर यह श्रृद्धा भी चेतना और विवेक के धरातल पर परखने और खरी उतरने के बाद ही। मेरे विचार से शिक्षक के रूप में अध्ययन-अध्यापन के लिए तटस्थता नितान्त आवश्यक है। यदि तटस्थता की उपेक्षा की गई तो शिक्षकीय और समीक्षकीय कार्य के प्रति न्याय नहीं हो सकता। इसी तटस्थ चिन्तन के काण कई बार तुलसी-साहित्य में ऐसे प्रश्न-चिन्ह सामने खड़े हुए जिन्होंने उस आस्था को खंडित भी किया। तुलसी-साहित्य की यह विशेषता है कि वहां अंध-श्रृद्धा रखने का आग्रह नहीं है। बीच-बीच में ऐसे अनेक प्रश्न उपस्थित होते हैं जो आपको सोचने-विचारने और आस्था की भावना को झकझोर कर परखने का अवसर प्रदान करते हैं और फिर समाधान सूत्र निकलते हैं। स्वयं तुलसीदास ने प्रश्नोत्तरों के अनेक अवसर निर्मित किये हैं। यह तुलसी के ही राम हैं जो सार्वजनिक रूप से कहते हैं- **'जो अनीति**

कछु मारवहुं भाई। तो मोहि बरजहु भय बिसराई।' इसीलिए तमाम विद्वानों ने तुलसी-साहित्य को अपनी-अपनी दृष्टि से देखा है- **'जाकी रही भावना जैसी। प्रभु मूरति देखी तिन तैसी।'** राम और जानकी को 'सुकृत की मूर्ति' बताकर मानवता के शाश्वत आदर्शों को जिस व्यापकता और आत्मीयता के साथ प्रस्तुत किया, वही उनकी विशिष्टता है। वे स्पष्ट कहते हैं-**'जनक सुकृत मूरित वैदेही। दशरथ सुकृत राम धर देही।'** सुकृत और कुकृत की पहचान कराना और सन्मार्ग की ओर चलने के लिए बिना किसी भेदभाव के जन-मानस को प्रेरित करना ही उनका प्रमुख लक्ष्य था जिसका प्रतिपादन अपनी कृतियों में उन्होंने विविध प्रकार से किया है।

मैंने विगत तीस-पैंतीस वर्षों में तुलसीदास एवं उनके साहित्य के विभिन्न पक्षों-प्रसंगों और पात्रों को लेकर समय-समय पर अनेक लेख लिखे हैं जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। उनमें से उपलब्ध आलेखों को संकलित कर इसमें प्रकाशित किया जा रहा है। इन संकलित आलेखों में विषय की क्रमबद्धता भले ही न हो, पर भावना और चिन्तन के विभिन्न पक्षों का उद्घाटन अवश्य है। इनमें कहीं श्रद्धा का अतिरेक है, तो कहीं पर जिज्ञासापरक प्रश्नों के तीखे तेवर भी। इनमें नयापन भले ही न हो, पर जिन प्रसंगों को लेकर आलेख लिखे गये हैं उनके साथ तर्कसंगत न्याय करने की पूरी ईमानदारी से चेष्टा की गई है। अब यह सुधी पारखी विद्वानों के ऊपर है कि वे इसे किस रूप में स्वीकार करते हैं।

'मानस चतुश्शताब्दी वर्ष' पर मैंने 'मानस-मनीषा' नामक ग्रंथ का सम्पादन कर लोकार्पित किया था। विश्ववंद्य महाकवि तुलसीदास जी की 'जन्म पंचशती' पर 'तुलसी के तेवर' शीर्षक से यह पुस्तक उनके पुनीत चरणों पर पुष्पाजंलि के रूप में सादर समर्पित करते हुए मैं कृतकृत्यता का अनुभव कर रहा हूं। मुझे विश्वास है कि वे इसे स्वीकार करेंगे।

श्रद्धापूर्ण का यह सुयोग श्री सुरंजन ने अपने मगध प्रकाशन से इसे प्रकाशित कर उपलब्ध कराया है। मैं उनके सुखी एवं यशस्वी रचनात्मक भविष्य की कामना करता हूं। वे स्वयं अच्छे लेखक और कवि हैं और रचनाकार की भावना को भली प्रकार समझते हैं। अंत में तुलसीदास जी के शब्दों में ही अपनी सीमायें स्वीकार करता हूं-

कवित विवेक एक नहिं मोरे।
सत्य कहऊं लिखि कागद कोरे।।

-डॉ. गंगाप्रसाद बरसैंया

तुलसी-जयंती-
श्रावण शुक्ल सप्तमी संवत्-2055
दिनांक 30 जुलाई 1998 ई.

अनुक्रमाणिका

1. तुलसी की सामाजिक चेतना 9
2. तुलसी की काव्य-दृष्टि 15
3. तुलसी का शाश्वत नवलेखन 21
4. मानस के व्याख्याकार राम 24
5. मानस के राम की धर्ममयी राजनीति 32
6. गोस्वामी तुलसीदास से इण्टरव्यू 39
7. राष्ट्र की प्रगति के दो पहिये : धर्म और राजनीति 45
8. तुलसी और स्वार्थी देवगण 48
9. तुलसी के भरत 55
10. मानस के मार्मिक स्थल 60
11. मानस के चित्रकूट 66
12. मानस और साकेत 71
13. संत तुलसीदास और राजापुर 75

यह मेरा सौभाग्य है कि मेरा जन्म बांदा (उ. प्र.) जिले के भौंरी ग्राम में हुआ जो तुलसीदास जी की जन्मस्थली राजापुर और उनकी तपस्थली चित्रकूट तथा आदिकवि बाल्मीकि के आश्रम-स्थल लालापुर के अत्यन्त निकट तथा तीनों के त्रिभुज के बीच पड़ता है। चित्रकूट का वह सम्पूर्ण क्षेत्र राममय है। बचपन में घर-घर रामचरितमानस का अखंड पाठ, गांव-गांव में रामलीलायें, आये दिन होने वाले भजन-कीर्तनों के संस्कार बचपन से ही मन में घनीभूत हो गये थे। पूजा के समय नित्य पढ़ी जाने वाली चौपाइयां जीवन का अभिन्न अंग बन गई।

लेखक-परिचय

डॉ. गंगा प्रसाद गुप्त बरसैंया

जन्मस्थान	:	भौरी, जिला बांदा (उ. प्र.) जन्मतिथि 6 फरवरी 1937
पद	:	प्राचार्य
संस्था	:	शासकीय छत्रसाल महाराजा महाविद्यालय, महाराजपुर जिला छतरपुर (म. प्र.)
योग्यता	:	एम. ए. (हिन्दी) प्रथम श्रेणी पी.एच.डी. (सन् 1964) जबलपुर विश्वविद्यालय (हिन्दी साहित्य में व्यक्तिवादी निबंध और निबंधकार)

प्रकाशित कृतियाँ :

1. हिन्दी साहित्य में निबंध और निबंधकार (शोध प्रबंध) 2. छत्तीसगढ़ का साहित्य और उसके साहित्यकार/3. आधुनिक काव्यः संदर्भ और प्रकृति/4. हिन्दी के प्रकुख एकांकी और एकांकीकार/5 बुन्देली : एक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन (सम्पादित)/6. मानस मनीषा (सम्पादित)/समवाय (सम्पादित)7. विन्ध्यालोक (सम्पादित)/अरमान वर पाने का (व्यंग्य)/8. हिन्दी का प्रथम अज्ञात सुदामा चरित्र (सम्पादन)/9. एकांकी संकलन (सम्पादन)/10. वीर विलास (आल्हा संबंधी प्राचीनतम पांडुलिपि)/11. नारी : एक अध्ययन/ मध्यकालीन काव्य (सम्पादन)/12. निन्दक नियरे राखिये (पुरस्कृत व्यंग)/ कर्म और आराधना आदि।

स्थाई निवास :

12, एम. आई. जी. हाउसिंग बोर्ड कालोनी, छतरपुर (म. प्र.)

फोन : 31024 (झ-07682)